विद्यालयी शिक्षा

महात्मा गांधी के विचारों में और *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समानता

नीतिन कुमार ढाढोदरा*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में 'विद्यालयी शिक्षा', 'उच्च शिक्षा', 'शिक्षा पर केंद्रित विचारणीय मुद्दे' और इस 'शिक्षा नीति के कार्यान्वयन की युक्तियों' का समावेश किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यालयी शिक्षा से संबंधित विभिन्न पहलुओं, जैसे— प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल शिक्षा, बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान, शिक्षण विधियाँ, पाठ्यचर्या, शिक्षक, समावेशी शिक्षा और विद्यालयी शिक्षा के मानदंडों से संबंधित विमर्श प्रस्तुत किया गया है। जिसमें महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों की अनुभूति होती हैं अर्थात महात्मा गांधी ने शिक्षा के बारे में जो विचार समाज के सामने रखे हैं, उनमें से कई विचारों का प्रतिबिंब राष्ट्रीय शिक्षा नीति में दिखाई देता है। मातृभाषा से शिक्षा, शिक्षा के माध्यम से चरित्र का विकास, शिक्षा के माध्यम से बच्चे का सर्वांगीण विकास, व्यावसायिक शिक्षा, शिक्षा के महत्वपूर्ण पहलुओं के रूप में खेल और व्यायाम शिक्षा, मूल्य शिक्षा, कौशल विकास, शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्भरता जैसे मुद्दों पर महात्मा गांधी ने जो विचार रखे हैं, वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति में निहित हैं। महात्मा गांधी के विचारों और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यालयी शिक्षा पर अनुशंसाओं के बीच समानता को इस लेख में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

यह देश की पहली शिक्षा नीति है जिसमें पूर्व प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा की परिकल्पना की गई है। हमारे विद्यार्थियों को वैश्विक नागरिक बनाने के साथ भारतीय शिक्षा और संस्कृति से जोड़ने के उद्देश्य से इस शिक्षा नीति को लागू किया गया है। बच्चे की जिज्ञासा और कल्पना को तेज़ करने के साथ-साथ, इस शिक्षा नीति की कल्पना उन कौशलों के निर्माण के लिए की गई है जो इक्कीसवीं सदी में अपरिहार्य हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विद्यार्थियों की रचनात्मकता और श्रम की गरिमा पर विशेष ज़ोर दिया गया है। यह नीति इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा से न केवल बच्चे की साक्षरता और संख्याज्ञान या गणन कौशल का विकास होना चाहिए, बल्कि बच्चे के संपूर्ण व्यक्तित्व का भी विकास होना चाहिए। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में प्रस्तुत विद्यालयी शिक्षा से संबंधित विचारों और महात्मा गांधी के विचारों के बीच कितनी समानता है, वह इस लेख में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। उन्होंने शिक्षा के बारे में समाज के सामने जो विचार रखे हैं, उनमें से कई विचारों का प्रतिबिंब राष्ट्रीय शिक्षा नीति में दिखाई देता है। मातृभाषा में शिक्षा, शिक्षा के माध्यम से चरित्र का विकास,

**सहायक प्रोफ़ेसर*, शिक्षा विभाग, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, गुजरात 380014

शिक्षा के माध्यम से सर्वांगीण विकास, व्यावसायिक शिक्षा, शिक्षा के महत्वपूर्ण पहलुओं के रूप में खेल और व्यायाम शिक्षा, मूल्य शिक्षा, कौशल विकास, शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्भरता जैसे मुद्दों पर गांधी जी ने जो विचार दिए हैं वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रतिबिंबित होते हैं।

हम सब जानते हैं कि शिक्षा के बारे में महात्मा गांधी का चिंतन दक्षिण अफ्रीका से शुरू हुआ। दक्षिण अफ्रीका के टॉल्स्टॉय फ़ॉर्म में आश्रम निवासियों के बच्चों को शिक्षित करने के विचार ने उनके मन में शिक्षा का जो बीज बोया, वह 1937 के वर्धा सम्मेलन में एक बड़ा पेड़ बना और भारतीय शिक्षा की एक रूपरेखा बनी। शिक्षा पर इन विचारों को बाद में 'बुनियादी शिक्षा' या 'नई तालीम' के नाम से जाना गया।

उनका मानना था कि शिक्षा के माध्यम से बच्चे में मानवीय मूल्यों का विकास होना चाहिए। वह कहा करते थे कि शिक्षा से मानवीय गुणों का विकास एवं अभिवृद्धि होनी चाहिए। महात्मा गांधी का स्पष्ट रूप से मानना था कि सच्ची शिक्षा वह है जो मनुष्य के अंतर्मन के गुणों को विकसित करे (*नवजीवन*, 1980; पृष्ठ 58)। लेकिन, वह जिन गुणों की बात कर रहे थे, वह परीक्षा परिणाम पत्रक के अंकों के बारे में नहीं थी, बल्कि हृदय और मन के सद्गुणों के बारे में थी। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के आंतरिक और बाहरी सदगुणों का विकास कर उन्हें बाहर निकालना होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मुख्य लक्ष्यों में व्यक्तित्व के उत्कृष्ट विकास को रखा गया है। जिसमें शिक्षा के माध्यम से बच्चे में कार्य करने की क्षमता, करुणा, सहानुभूति, उद्यम, साहसिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और रचनात्मकता आदि को विकसित करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का यह उद्देश्य महात्मा गांधी का प्रमुख शिक्षा विचार ही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह अपेक्षा की गई है कि विद्यार्थियों में पारंपरिक भारतीय मूल्य, सत्य, अहिंसा, स्वच्छता, नि:स्वार्थता, शांति, त्याग, सहिष्णुता, विविधता, बहुलवाद, लैंगिक समानता, उचित आचरण, बड़ों के प्रति सम्मान जैसे सभी मौलिक और संवैधानिक मूल्य विकसित हो। विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता, समता, सहानुभूति, धैर्य, क्षमा, सहानुभूति, देशभक्ति, करुणा, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व का विकास हो (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* 4.28)। इस नीति में दी गई शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शिक्षक, शाला, पर्यावरण, सामाजिक कार्यकर्ता, परामर्शदाताओं और पाठ्यचर्या में परिवर्तन के माध्यम से विद्यार्थियों को संवेदनशील बनाया जाएगा। उसके लिए पाठ्यचर्या में समता, समानता, सहानुभूति, सहिष्णुता, मानवाधिकार जैसे मूल्यों को शामिल किया जाए। इसके साथ ही, अन्य संस्कृतियों, धर्मों, भाषाओं और जातियों के बारे में जानकारी प्रदान करने हेतु विद्यार्थियों को संवेदनशील बनाया जाएगा (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* 6.20)। महात्मा गांधी मानते थे कि बच्चों के भीतर जो सर्वोत्तम शक्तियाँ हैं, उनको बाहर खींचकर लाएँ वही सच्ची शिक्षा है। उनका यही शिक्षा विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में हमें दूसरे शब्दों में दिखाई पड़ता है।

वह कहते थे कि दूध को कागज़ के बर्तन में नहीं रखा जा सकता, उसी तरह शिक्षा रूपी दूध को बिना व्यायाम के कागज़ जैसे शरीर में नहीं रखा जा सकता। मनुष्य को व्यायाम की उतनी ही

आवश्यकता है, जितनी उसे हवा, पानी और अनाज की। काम चाहे जितना भी हो, हमें व्यायाम के लिए समय निकालना चाहिए जैसे हम खाने के लिए समय निकालते हैं (*नवजीवन*, 1969; पृष्ठ 18–20)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी कहती है कि खेल विद्यार्थियों को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखता है और उनकी बौद्धिक क्षमताओं का विकास करता है। इसलिए इस नीति में 'खेल-कूद' एवं 'खेल-कूद के माध्यम से शिक्षा' को विशेष महत्व दिया गया है। साथ ही, इस नीति में यह भी स्पष्ट किया गया है कि खेल के माध्यम से बच्चों में समूह कार्य, सहयोग, पहल, आत्मनिर्भरता, आत्म-अनुशासन, ज़िम्मेदारी, नागरिकता जैसे गुणों का विकास होता है। अतः दैनिक शिक्षण-कार्य में 'खेल के माध्यम से शिक्षा' को अपनाकर जीवनभर शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने का दृष्टिकोण विकसित किया जाएगा (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* 4.8)। छह साल की उम्र तक बच्चे के दिमाग का 85 प्रतिशत हिस्सा विकसित हो जाता है। पहले छह साल बच्चे के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। इसलिए पूर्व-प्राथमिक शिक्षा गतिविधि आधारित, खेल आधारित, खेल-कूद आधारित होनी चाहिए। इस पहलू पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विशेष ज़ोर दिया गया है। इस प्रकार की शिक्षा से बच्चों के बौद्धिक, भावनात्मक और मनो-शारीरिक विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* 1.2 और 1.6)। महात्मा गांधी भी कहते थे कि बच्चों को शिक्षा एक खेल की तरह महसूस होनी चाहिए और खेल को भी शिक्षा का एक अनिवार्य अंग माना जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि अलग-अलग विषयों को अलग-अलग तरीकों से पढ़ाने और उसी के लिए विषय-विशेषज्ञ शिक्षकों की नियुक्ति के साथ ही विभिन्न विषयों के बीच अंतर-संबंधों और उस विषय की अनुभवात्मक शिक्षा पर समान रूप से ज़ोर दिया जाएगा (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* 4.2)। वहीं विद्यालयी शिक्षा के सभी चरणों में अनुभव आधारित अधिगम को अपनाया जाएगा तथा शिक्षण विभिन्न विषयों के संयोजन में किया जाएगा (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* 4.6)। महात्मा गांधी भी यही कहते थे कि ज्ञान खंडित नहीं है। इसलिए उनका मानना था कि अलग-अलग विषय कई तरह से आपस में जुड़े हुए हैं, अतः शिक्षा में अलग-अलग विषयों को एक-दूसरे से एकीकृत पढ़ाया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, समग्र विकास और कौशल निर्माण होगा (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* 4.4) महात्मा गांधी भी यही कहते थे। ज्ञान चरित्र निर्माण के लिए देना चाहिए। ज्ञान एक उपकरण है जिसके द्वारा हम चरित्र का विकास करते हैं (*नवजीवन,* 1971; पृष्ठ 292)। सिर्फ़ पढ़ने-लिखने से ही किसी व्यक्तित्व का चरित्र, मूल्य या नैतिकता नहीं बदल जाती, उन्होंने ऐसी शिक्षा का सपना देखा था जिसमें लिखने, पढ़ने या बोलने के साथ-साथ चरित्र का भी विकास हो। इसीलिए वे कहते थे कि सच्ची शिक्षा बहुत सारी सूचनाओं और आँकड़ों को दिमाग में समेटने में नहीं है, न ही कई किताबें पढ़ने और परीक्षा पास करने में है, बल्कि चरित्र का विकास करने में है (देसाई, 1931)। मनुष्य तीन शक्तियों का योग है—

शरीर + मन + आत्मा, महात्मा गांधी ने उस व्यक्ति को शिक्षित माना जो अपने शरीर, मन और आत्मा को अपने नियंत्रण में रखे। गांधी जी कहा करते थे कि शिक्षा साक्षरता से परे है। शिक्षा घोड़ा है और साक्षरता गाड़ी है। अब इसमें कोई शक नहीं कि अगर घोड़ा आगे होगा तो गाड़ी पीछे खींच ली जाएगी। लेकिन आज की शिक्षा गाड़ी को आगे और घोड़े को पीछे रखती है। घोड़े को गाड़ी से कैसे खींचे? और अगर घोड़ा पीछे है, तो क्या सिर पर मारकर गाड़ी को धक्का दिया जा सकता है? जो केवल पढ़े-लिखे हैं, वे जंगली घोड़ों की तरह हैं, जो उसके सवार को कब पलट दें, कहाँ ले जाएँ इस बात का कोई ठिकाना नहीं होता। लेकिन अगर इसे प्रशिक्षित किया जाए तो घोड़ा वश में हो जाता है और सवार के आदेश अनुसार चलने-दौड़ने लगता है। शरीर, मन और आत्मा वे नींव हैं जिन पर व्यक्तित्व की इमारत का निर्माण किया जा सकता है। लेकिन शरीर, मन और आत्मा को शिक्षा से जितना कम संस्कारित किया जाता है; व्यक्तित्व और मानवता के भवन की नींव उतनी ही कमज़ोर होती जाती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बच्चों के सर्वांगीण विकास का आकलन करने के लिए 'संपूर्ण प्रगति-पत्र' (होलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड) की अनुशंसा की गई है। जिसमें संज्ञानात्मक, भावनात्मक और कार्यात्मक क्षेत्रों में बच्चे द्वारा की गई प्रगति प्रस्तुत की जाएगी। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति* में ऐसा बताया गया है कि विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से विद्यार्थियों का मूल्यांकन करने हेतु स्व-आकलन, सहकर्मी आकलन और शिक्षक आकलन को भी शामिल किया जाएगा (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* 4.35)।

महात्मा गांधी कहा करते थे कि किसी बच्चे को दूसरी भाषा के माध्यम से शिक्षित करना उनके विकास में रुकावट डालने के बराबर है। यह बच्चे की सीखने की प्रेरणा को मारता है। विकास की इमारत मातृभाषा की नींव पर ही बन सकती है। अन्य भाषाओं के माध्यम से सरलता, सोच, साहस, धैर्य, बहादुरी, निडरता आदि गुण नष्ट हो जाते हैं। उनका दृढ़ विश्वास था कि यदि बच्चों को भाषा अन्य के माध्यम से पढ़ाया जाता है तो जो गुण हम एक बच्चे में विकसित करने के लिए शिक्षा देते हैं, वे नष्ट हो जाते हैं (*नवजीवन*, 1969; पृष्ठ 19)। यदि कोई व्यक्ति अपने मन या आत्मा को पूर्ण रूप से विकसित करना चाहता है, तो मातृभाषा का कोई विकल्प नहीं है। शरीर के विकास के लिए माँ का दूध उतना ही ज़रूरी है जितना की मस्तिष्क के विकास के लिए मातृभाषा। अभी तक माँ के दूध और मातृभाषा का कोई विकल्प नहीं मिला है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस सिद्धांत को स्वीकार किया है कि मातृभाषा बच्चे की समझ और बच्चे की शिक्षा की नींव को मज़बूत करती है। बच्चे घर पर बोली जाने वाली भाषा यानी मातृभाषा के माध्यम से अमूर्त अवधारणाओं को तेज़ी से सीख सकते हैं। अतः कक्षा 8 तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा, स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा होगी। सरकारी और निजी दोनों स्कूलों में शिक्षा का माध्यम कम से कम कक्षा 8 तक मातृभाषा होगी। प्रत्येक विषय की पाठ्यपुस्तकें मातृभाषा में भी उपलब्ध कराई जाएँगी। बच्चे की मातृभाषा और शिक्षा के माध्यम के बीच की खाई को मिटाना होगा। विद्यार्थियों को सभी भाषाएँ उच्च गुणवत्ता के साथ सिखाई जाएँगी। किसी भाषा को अच्छी तरह से सीखने और सिखाने

के लिए उस भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि यह कि भाषा को गहराई से पढ़ाया जाना चाहिए (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* 4.11)। विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण अनुवादित पुस्तकें मातृभाषा में प्रकाशित की जाएँगी, जो आनंददायक एवं प्रेरक होंगी (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* 2.8)। विज्ञान और गणित की पाठ्यपुस्तकें द्विभाषी बनाई जाएँगी (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* 4.14)। उन्होंने यह विचार भी प्रस्तुत किया कि यदि सीखने का माध्यम मातृभाषा हो तो बच्चे में सीखने की प्रवृत्ति बढ़ती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है कि बच्चे की रचनात्मकता और व्यावसायिकता को विकसित करने के लिए कक्षा 6 से 8 में 10 दिवसीय इंटर्नशिप दाखिल की जाएगी। इसमें बच्चे कुशल माली, किसान, कुम्हार बढ़ईगिरी, बिजली के काम, बागवानी, मिट्टी के काम आदि का अनुभव प्राप्त करेंगे (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* 4.26)। महात्मा गांधी ने भी यही कहा था कि बच्चे की शिक्षा उसे कुछ उपयोगी हस्तशिल्प सिखाने से शुरू होनी चाहिए और जिस क्षण से उसकी शिक्षा शुरू होती है, उसे कुछ नया बनाना सिखाया जाना चाहिए (महात्मा गांधी के कवर्णानो कोयड़ो, *नवजीवन*, अहमदाबाद 1956; पृष्ठ 316)। उनका यह भी मानना था कि पाठ्यचर्या के अंदर उद्योग को नहीं जोड़ा जाना चाहिए, बल्कि उद्योग के अंदर पाठ्यचर्या को जोड़ा जाना चाहिए। उन्होंने उद्योग पर इतना ज़ोर दिया था कि जो पाठशाला उद्योग के माध्यम से विद्यार्थियों को नहीं पढ़ाती है उस पाठशाला में विद्यार्थियों को न ही पढ़ाया जाए। दक्षिण अफ्रीका में स्थापित टॉल्स्टॉय आश्रम में किए गए शैक्षिक प्रयोगों में, उन्होंने आठ घंटे का उद्योग रखा था। बच्चों ने खुदाई का काम, खाना पकाने का काम, सफ़ाई, जूता बनाने का काम, बढ़ईगिरी, डाक कार्य करते-करते शिक्षा प्राप्त की थी (महात्मा गांधी, 1937)। बापू का मानना था कि बुद्धि विकसित करने के लिए शारीरिक श्रम सबसे अच्छा साधन है। उन्होंने मन, बुद्धि और आत्मा के विकास के लिए शारीरिक श्रम को अनिवार्य माना।

शिक्षक सामाजिक-भावनात्मक पहलू पर भी ध्यान देंगे जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए सर्वथा आवश्यक है (देखें 5.14)। महात्मा गांधी ने भी कहा था कि सच्ची शिक्षा वह है जो व्यक्ति के आंतरिक गुणों का विकास करे। यदि हम उन गुणों का विकास करें तो यह एक उत्कृष्ट शिक्षा होगी।

उनका मानना था कि औपचारिक शिक्षा कि प्राप्ति के अंत में विद्यार्थी रोटी कमाने के लिए सक्षम होना चाहिए। गांधी जी आजीविका को शिक्षा की उपज मानते थे। जब कोई बच्चा शिक्षा के पथ पर अनुभव प्राप्त करते-करते मंज़िल पर पहुँचे तब वह इतना परिपक्व या मज़बूत बने कि उसे जीने के लिए किसी के सामने हाथ न फैलाने पड़े। जब तक उसके हाथ, पग साबूत हों तब तक जीने के लिए भीख न माँगनी पड़े, ऐसी शिक्षा को गांधी जी सच्ची शिक्षा मानते थे (*नवजीवन*, 1970; पृष्ठ 28)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में व्यावसायिक शिक्षा को भी महत्व दिया गया है। माध्यमिक शिक्षा में पहुँचे सब विद्यार्थियों को किसी एक व्यवसाय की ओर उन्मुख होने की व्यवस्था की गई है। इसलिए यह भी उम्मीद की जा रही है कि 2030 तक उच्च शिक्षा के सभी संस्थानों में व्यावसायिक शिक्षा को शामिल कर लिया जाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार, 2025 तक 50 प्रतिशत शिक्षण संस्थान व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देंगे। उच्च प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में प्रारंभ से व्यावसायिक अनुभव की शुरुआत के साथ उच्च शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण व्यावसायिक शिक्षा को आसानी से एकीकृत किया जाएगा। प्रत्येक बच्चे को कम से कम एक व्यवसाय सीखने, जितना संभव हो उतने ज़्यादा व्यवसाय के संपर्क में आने के साथ-साथ भारतीय कला और कारीगरी से जुड़े विभिन्न व्यवसाय सीखे और श्रम की गरिमा सीखने पर ज़ोर दिया जाएगा (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* 16.4)। माध्यमिक विद्यालयों को पॉलिटेक्निक संस्थानों, औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्रों और स्थानीय उद्योगों से जोड़ा जाएगा। विद्यार्थियों में कौशल विकसित करने के लिए शालाओं में प्रयोगशालाएँ स्थापित की जाएँगी। व्यावसायिक शिक्षा में विद्यार्थियों के लिए 'भारतीय लोकविद्याएँ' सीखने का प्रावधान किया जाएगा (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* 16.5)। भविष्य में व्यावसायिक क्षेत्रों में आवश्यक कौशल और स्थानीय क्षेत्र में उपलब्ध रोज़गार के अवसरों को ध्यान में रखते हुए व्यावसायिक क्षेत्रों का चयन किया जाएगा (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,* 16.6)।

पूर्व-प्राथमिक शाला से लेकर उच्च शिक्षा तक प्रत्येक स्तर पर मूल्यों और कौशलों की एक विशिष्ट सूची तैयार की जाएगी, जिसे पाठ्यचर्या और शिक्षण विधियों में एकीकृत किया जाएगा। अध्ययन-अध्यापन पद्धतियों और व्यवहार से इन कौशलों और मूल्यों को विद्यार्थियों के जीवन में उतारने के लिए विशिष्ट पाठ्यक्रम की रूपरेखा विकसित की जाएगी। उनका मानना था कि हर बच्चे के लिए शिक्षा मुफ़्त और अनिवार्य होनी चाहिए (महात्मा गांधी, 1937)। गांधी जी के इन विचारों का प्रतिबिंब राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी देखने को मिलता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शालाओं में आवश्यक भौतिक सुविधाओं के विकास, शिक्षकों की नियुक्ति के साथ-साथ विद्यार्थियों की उपस्थिति के सटीक पंजीकरण के लिए एक तंत्र स्थापित करने की बात की गई है, ताकि हर बच्चा शिक्षित हो और अपव्यय की मात्रा कम हो। अपव्यय को कम करने के लिए स्थानीय भाषा से परिचित शिक्षकों की नियुक्ति करना, पाठ्यचर्या को रोचक और दैनिक जीवन में उपयोगी बनाया जाएगा (देखें 3.4)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का लक्ष्य 2030 तक प्राथमिक से माध्यमिक शिक्षा तक 100 प्रतिशत सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) हासिल करना है, ताकि अपव्यय की मात्रा को घटाकर शिक्षा को सुगम बनाया जा सके (देखें 3.1)।

सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के बच्चों के लिए स्कूल में नामांकन और उस नामांकन को बनाए रखना मुश्किल है। इसलिए उनका मानना था कि आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों के बच्चों को छात्रवृत्ति और अन्य सहायता दी जानी चाहिए (महात्मा गांधी, 1933)। महात्मा गांधी इस वर्ग के बच्चों के लिए छात्रावास की सुविधा के भी हिमायती थे। उनके इन्हीं विचारों की अनुभूति राष्ट्रीय शिक्षा नीति में निहित होती है। दिव्यांग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़े वर्ग के बच्चों के नामांकन एवं नामांकन दर को बनाए रखने के लिए *राष्ट्रीय शिक्षा नीति* में छात्रवृत्ति, साइकिल, परिवहन सुविधा, छात्रावास सुविधा आदि प्रदान करने का सुझाव दिया गया है।

महात्मा गांधी ने कहा था कि, मैंने अब तक भारत को जितनी भी चीज़ें दी हैं, उनमें से यह योजना और शिक्षा की पद्धति सबसे महान है, और मुझे नहीं लगता कि मैं इससे बेहतर कुछ दे सकता हूँ। उनके द्वारा दी गई 'नई तालीम' भारतीय संदर्भ में एक शिक्षा नीति की रूपरेखा ही थी। उन्हें 'नई तालीम' में विश्वास था, क्योंकि यह मन को शुद्ध करती है, शरीर को मज़बूत करती है और आत्मा को परिशुद्ध करती है। उनके शैक्षिक विचारों और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बीच बहुत समानता दिखाई देती है। जब हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पढ़ते और समझते हैं, तो महात्मा गांधी के विचारों की ही प्रतिध्वनि सुनाई देती है। लेकिन राष्ट्रीय शिक्षा नीति केवल एक परिपत्र नहीं है जिसे केवल परिपत्रित करके लागू किया जा सकता है। इसे अमलीकृत करने के लिए मन बनाना होगा। शिक्षण संस्थानों को दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ काम करना होगा। यदि संस्थाएँ दृढ़ इच्छाशक्ति से कार्य करें तो महात्मा गांधी ने 'नई तालीम' के बारे में जो कहा था वह सत्य होगा— 'देखो, 'नई तालीम' का यह कार्य मेरे जीवन का अंतिम कार्य है। अगर ईश्वर इसे पूरा होने देंगे तो हिंदुस्तान का मानचित्र ही बदल जाएगा।"

संदर्भ

देसाई, म. 1931. लंडननो पत्र. *नवजीवन*. 5 (13), पृष्ठ संख्या 31–35.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

महात्मा गांधी. 1937. स्वावलंबी निशाळो. *हरिजन बंधु*. 5 (30), पृष्ठ संख्या 233–235.

_____.1956. केळवणीनो कोयडो. *नवजीवन*. अमदाबाद

_____.1933. हरिजन शिक्षको माटे. *हरिजन बंधु*. 1 (35), पृष्ठ संख्या 278.

_____.1937. मुंबईमां प्राथमिक केळवणी. *हरिजन बंधु*. 5 (19), पृष्ठ संख्या 228–229.

नवजीवन (सं). 1969. गांधीजीनो अक्षरदेह-14. बीजी गुजरात केळवणी परिषदमां भाषण. *नवजीवन*. अमदाबाद.

_____.1970. गांधीजीनो अक्षरदेह-26. बनारसमां विद्यार्थीओ समक्ष भाषण. *नवजीवन*. अमदाबाद.

_____.1971. गांधीजीनो अक्षरदेह-21. राष्ट्रीय शाळानी राष्ट्रीयता. *नवजीवन*. अमदाबाद.

_____.1980. गांधीजीनो अक्षरदेह-57. मदुरामां विद्यार्थी सभा समक्ष भाषण. *नवजीवन*. अमदाबाद.